



FuturePointIndia.com

(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

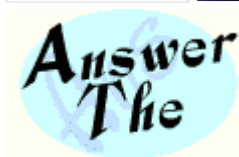
संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

मुखपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

चैनल

- राशिफल
- ? ज्योतिष संस्था *नया*
- ? ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए



आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

वोट

[पिछले माह के परिणाम](#)

अध्ययन किस दिशा में करें?

डॉ. भोजराज द्विवेदी

कई बार यह प्रश्न आता है कि बच्चों का अध्ययन कक्ष किधर रखें, अथवा अध्ययन किस दिशा में बैठ कर करना चाहिए। सदैव ध्यान रखें कि पूर्व, ईशान्य एवं उत्तर दिशाएं ज्ञानवर्धक दिशाएं कहलाती हैं। यदि विद्यार्थी उत्तर, पूर्व अथवा ईशान्य दिशा की ओर मुंह कर के पढ़ता है, तो वह विलक्षण प्रतिष्ठा का धनी एवं ज्ञानवान होगा। परिस्थितिवश बच्चों का अध्ययन कक्ष पश्चिम दिशा में भी हो सकता है, पर ध्यान रहे उनका मुख सदैव उपर्युक्त तीनों दिशाओं में ही होना चाहिए। तभी विद्या बल बढ़ेगा। अध्ययन कक्ष में सरस्वती की तस्वीर लगाएं। प्रेरणादायक महापुरुषों और, गुरुजनों के चित्र लगाएं।

हमारे एक परिचित की लड़की अपने प्रेमी के साथ भाग गयी। मित्र बड़े परेशान। बोले इतने रुपये पढ़ाई पर खर्च किये, कितने संस्कार दिये, फिर भी लड़की भाग गयी। मैने लड़की का अध्ययन कक्ष देखा, तो उसमें जगह-जगह फिल्मी हीरो के चित्र लगे हुए थे। अध्ययन कक्ष दक्षिण दिशा में था। जब अध्ययन कक्ष विकृत होगा, तो उसमें रहने वाले व्यक्ति पर भी विकृत प्रभाव पड़ेगा। अतः अध्ययन के आंतरिक सजावट के साथ-साथ अध्ययन करते समय पढ़ने की दिशा पर भी ध्यान रखना चाहिए।

पूजा स्थल

घर में यह सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। पूजा का स्थल, कीर्तन, अध्ययन, अध्यापन हमेशा ईशान्य कोण में ही होना चाहिए। पूजा करते समय व्यक्ति का मुख पूर्वाभिमुख होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख पूर्व, पश्चिम या दक्षिण की तरफ रख सकते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इंद्र, सूर्य, कार्तिकेय आदि की मूर्तियों के मुंह पूर्व या पश्चिम दिशा की ओर ही होने चाहिए। गणेश, कुबेर, दुर्गा, भैरव, षोडश मातृका के मुंह हमेशा दक्षिण की ओर ही होने चाहिए। हनुमान जी का मुंह नैऋत्य दिशा में होना चाहिए।

भूमि/भूखंड एवं भवन परीक्षा

भूमि की विविध परीक्षाएं एवं खात परीक्षण :

भूमि की परीक्षा चार प्रकार से करने को कहा गया है। अमुक भूमि शुभ है, या अशुभ, इसकी परीक्षा करने के लिए, गृहकर्ता के हाथ से, गृह के

If you are not able to view the page properly then **Download Hindi Font.**

पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी

.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



- हमारी साइट को अपने Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित लियो गोल्ड, विंडो पर आधारित जन सामान्य के प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है। और

मध्य में, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खुदवाएं। फिर उस गड्ढे को उसी मिट्टी से भरें। यदि गड्ढा भरने में मिट्टी कम हो जाए, तो अशुभ, ठीक-ठीक हो जाए तो सामान्य और गड्ढा भर कर मिट्टी ज्यादा हो, तो शुभ होता है।



भूमि परीक्षा को ले कर वास्तु शास्त्र में बहुत सी सामग्री दी गयी है और कहा गया है : 'ततो भूमि परीक्षेत वास्तुज्ञानविशारदः', यानी वास्तु शास्त्र विद्या के ज्ञाता को सबसे पहले विभिन्न प्रकार से भूमि की परीक्षा करनी चाहिए।

लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

यज्ञ कुंड-मंडप आदि निर्माण हेतु शुद्ध (सोम, बुध, गुरु या शुक्र) वारों में, रिक्तादि निंदित तिथियों को छोड़ कर, व्यतिपात आदि अशुभ योग रहित शुभ दिनों में, मंडप भूमि के परीक्षण हेतु पांच ब्राह्मणों को ले कर जाएं। यह भूमि यज्ञ योग्य है या नहीं? इसकी परीक्षा करने हेतु उस भूमि पर कोई घास, तृण हो, तो उसे जला दें। तत्पश्चात् जानु मात्र भूमि खोदें और उस गड्ढे को जल से परिपूर्ण कर दें और पुण्याहवाचन करें। दूसरे दिन आ कर देखें। अगर जमीन फट जाए, उसमें हड्डी वगैरह अशुभ वस्तु दिखें, तो यह भूमि हवन योग्य नहीं। यह यज्ञकर्ता के आयु तथा धन का नाश करेगी। गड्ढे वाली, कांटे वाली, दीमक वाली भूमि का तो दूर से ही त्याग कर देना चाहिए। नारायण भट्ट के अनुसार उपर्युक्त एक हाथ गहरा, एक हाथ चौड़ा खड्डा, सूर्यास्त के समय खोद कर, जल से भरना चाहिए। प्रातःकाल यदि उसमें जल बचा हुआ मिले, तो शुभ, जल नहीं रहे, तो मध्यम। यदि जमीन फट जाए, तो उसे अशुभ मानना चाहिए।

खनन समय प्राप्त सामग्री :

खात (नींव) के लिए भूमि खोदते समय पिपीलिका (दीमक, अजगर वगैरह) दिख पड़ें, तो उस भूमि पर निवास नहीं करना चाहिए। यदि तुष (भूसा), सर्प, अंडा आदि दिखे, तो मरणप्रद कष्ट होता है। वराटिका (कौड़ी) दुःख और कलह देती है। फटे हुए कपड़े विशेष दुःख देते हैं। जला हुआ काष्ठ (कोयला) रोग प्रदान करता है। खप्पर से कलह और लोहे से गृहकर्ता का मरण होता है। हड्डी, कपाल, केशादि का मिलना भूस्वामी के आयु का नाश करता है।



परंतु यदि गोशृंग, शंख, शुक्ति, कछुआ मिले, तो शुभ होता है। भूमि खोदते समय यदि पत्थर मिले, तो सुवर्ण लाभ होता है और ईंट मिले, तो समृद्धि होती है। द्रव्य मिले, तो उत्तम सुख और ताम्र इत्यादि धातु मिले, तो ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

FuturePointIndia.com के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[पयूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)